संख्या-471/2017/206/22-2-2017-17(150)/2017

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 ***लखनऊ: दिनांक 22 जून, 2017***

विषय:- केन्द्रीय कारागार, फतेहगढ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी भगवानदीन पुत्र श्री धनीराम निवासी जनपद-कानपुर नगर की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-44244-359/प्रोबेशन-3/16(एम-17-11-2016) दिनांक-16-12-2016 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, फतेहगढ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी भगवानदीन पुत्र श्री धनीराम, निवासी ग्राम-गढी, थाना-नर्वल, जनपद-कानपुर नगर का रहने वाला है। बन्दी ने दिनांक 31.08/01.09.1997 को मध्य रात्रि लगभग 01:00 बजे अपने चाचा छोटेलाल की चाकूओं से गले में रात को सोते वक्त चोट पहुँचाकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-1648/1997 में भा0द0वि0 की धारा-302के अन्तर्गत मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश,(कोर्ट सं0-12), कानपुर नगर के आदेश दिनांक 30.01.2003 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया जिसे मा0 उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 21.12.2015 द्वारा यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 05.01.2016 तक 14 वर्ष 00 माह 00 दिन की अपरिहार सजा तथा 18 वर्ष 03 माह 22 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का 01 सहअभियुक्त मा0 सत्र न्यायालय में विचारण हेतु नहीं आया, फरार है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की है। जिला प्रोबेशन अधिकारी तथा जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में यह उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने दिनांक 31.08/01.09.1997 को मध्यरात्रि अपने चाचा छोटेलाल की चाकूओं से गले में रात को सोते वक्त चोट पहुँचाकर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है तथा इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। जेल रिपोर्ट के अनुसार बन्दी की आयु 43 वर्ष है तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ है। बन्दी द्वारा जघन्य अपराध किये जाने, भविष्य में पुन: अपराध करने में सक्षम होने, जेल में आगे निरूद्ध रखने का कोई सार्थक प्रयोजन होने, की सम्भावना होने, परिवार की सामाजिक/आर्थिक दशा रिहाई हेतु उपयुक्त न होने, इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, कानपुर नगर द्वारा अतिरिक्त 05 बिन्दु की आख्या में की गयी है। इस

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी भगवानदीन पुत्र श्री धनरीराम को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

3- अत: उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी भगवानदीन (बन्दी संख्या-16098) पुत्र श्री धनीराम निवासी जनपद- कानपुर नगर के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-471/2017/206(1)/22-2-2017 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, कानपुर नगर।

2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, फतेहगढ़।

3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।

4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्या-471/2017/206/22-2-2017-17(150)/2017

दिनांक 22 जून, 2017 का संलग्नक

<u>सरकार के आदेश</u>

केन्द्रीय कारागार, फतेहगढ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी भगवानदीन पुत्र श्री धनीराम, निवासी-ग्राम-गढी, थाना-नर्वल, जनपद-कानपुर नगर का रहने वाला है। बन्दी ने दिनांक 31.08/01.09.1997 को मध्य रात्रि लगभग 01:00 बजे अपने चाचा छोटेलाल की चाकूओं से गले में रात को सोते वक्त चोट पहुँचाकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-1648/1997 में भा0द0वि0 की धारा-302के अन्तर्गत मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश,(कोर्ट सं0-12), कानपुर नगर के आदेश दिनांक 30.01.2003 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया जिसे मा0 उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 21.12.2015 द्वारा यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 05.01.2016 तक 14 वर्ष 00 माह 00 दिन की अपरिहार सजा तथा 18 वर्ष 03 माह 22 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का 01 सहअभियुक्त मा0 सत्र न्यायालय में विचारण हेतु नहीं आया, फरार है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की है। जिला प्रोबेशन अधिकारी तथा जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में यह उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने दिनांक 31.08/01.09.1997 को मध्यरात्रि अपने चाचा छोटेलाल की चाकूओं से गले में रात को सोते वक्त चोट पहुँचाकर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है तथा इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। जेल रिपोर्ट के अनुसार बन्दी की आयु 43 वर्ष है तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ है। बन्दी द्वारा जघन्य अपराध किये जाने, भविष्य में पुन: अपराध करने में सक्षम होने, जेल में आगे निरूद्ध रखने का कोई सार्थक प्रयोजन होने, की सम्भावना होने, परिवार की सामाजिक/आर्थिक दशा रिहाई हेतु उपयुक्त न होने, इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, कानपुर नगर द्वारा अतिरिक्त 05 बिन्दु की आख्या में की गयी है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी भगवानदीन पुत्र श्री धनरीराम को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in